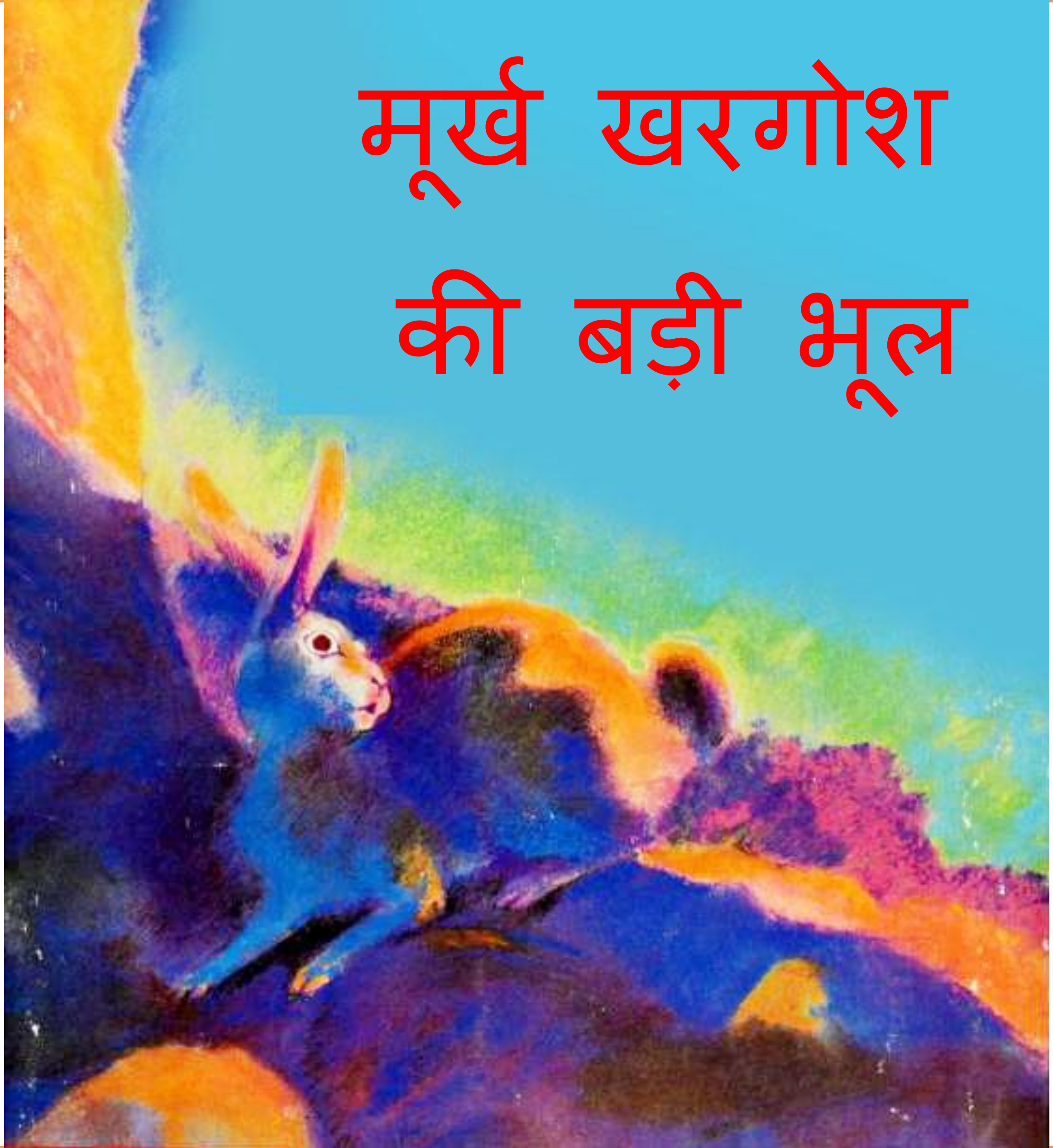
मूर्ख खरगोश की बड़ी भूल





मूर्ख खरगोश की बड़ी भूल

'मूर्ख खरगोश की बड़ी भूल' एक पौराणिक जातक कथा है. जातक कथायें भगवान बुद्ध के पूर्व जन्म की कहानियाँ हैं. इन मौखिक कथाओं को कोई हज़ार वर्ष पहले लिख कर भविष्य के लिए सुरक्षित किया गया. 2500 वर्षों से सारे एशिया में ऐसी जातक कथाओं को कई बार सुनाया गया, उनको मंचित किया गया, उनका चित्रण किया गया और उनके आधार पर मूर्तियाँ भी बनाई गईं.

पश्चिम के देशों में जातक कथाओं को लोक-साहित्य का भंडार समझा जाता है. ऐसा भी माना चाहता है कि ईसॉप की और अरेबियन नाइट्स की कहानियों का मूल स्रोत शायद यह जातक कथायें ही थीं. "हैन्नी पैन्नी," "चिकन लिटल," "स्काई इज़ फालिंग" जैसी प्रचलित कहानियों का सबसे पुराना रूप भी शायद यही जातक कथा है.

'मूर्ख खरगोश की बड़ी भूल' की कहानी मूलत भय और अफवाहों की कहानी है. बच्चों को यह कहानी बहुत अच्छी लगती है. शेर के साथ अपनी तुलना करना उन्हें अच्छा लगता है क्योंकि शेर ने संकट से भागने के बजाय दूसरों की सहायता करने का प्रयास किया. उन्हें मूर्ख खरगोश पर हँसी भी आती है जिसे आखिरकार पता लग ही गया कि उसका डर निराधार था. कठिनाइयों के सामने साहस से काम लेना और अंतत: उन पर हँस देना ही तो जीवन को सार्थक बनाता है.



बहुत सवेरे एक दिन एक खरगोश जंगल के अंदर एक पेड़ के नीचे सो रहा था. पेड़ के पत्तों से छन कर आती धूप चमक रही थी और धरती को गर्म कर रही थी. खरगोश हिलने-डुलने लगा.

अभी तक उसकी नींद पूरी तरह खुली नहीं थी, कभी वह जाग जाता था और कभी सो जाता था. इसी अवस्था में अचानक एक मूर्खतापूर्ण बात उसके मन में आई. *अगर धरती फट जाये तो?* छोटा खरगोश उठ बैठा, उसकी नींद पूरी तरह खुल गई थी. "अगर आज धरती फट जाये तो?" उसने ऊँची आवाज़ में कहा. और मूर्ख खरगोश संकट के संकेत सुनने की कोशिश करने लगा.

धड़ाम! उसे अपने पीछे एक ज़ोर की आवाज़ सुनाई दी और अपने आसपास देखे बिना ही वह उछल पड़ा और भागने लगा और चिल्लाने लगा, "धरती फट रही है! धरती फट रही है!"



शीघ्र ही वह एक अन्य खरगोश के पास से गुज़रा. “अरे, इतनी हड़बड़ी क्या है? तुम क्यों भाग रहे हो?” दूसरे खरगोश ने पूछा. लेकिन छोटे खरगोश ने चिल्लाकर बस इतना ही कहा, “धरती फट रही है! धरती फट रही है! अपनी जान बचाने के लिए भागो.” और वह भाग खड़ा हुआ.

“धरती फट रही है? ओह, नहीं!” दूसरा खरगोश चिल्लाया और वह भी छोटे खरगोश के पीछे दौड़ पड़ा. वह दोनों तीसरे खरगोश के पास से गुज़रे.

“क्या हुआ?” तीसरे खरगोश ने चिल्लाकर पूछा. “धरती फट रही है!” दोनों ने हाँफते हुए कहा. “भागो.” और तीसरा भी भागने लगा.

अब तीनों खरगोश एक सोते हुए भालू के पास से गुज़रे. भालू ने अँगड़ाई ली और अपनी आँखें मलीं. “क्या हो रहा है? तुम भाग क्यों रहे हो?” उसने पूछा. “रुको और मुझे बताओ.” लेकिन खरगोश भागते रहे और चिल्लाते रहे, “धरती फट रही है! भागो, भागो.”



"धरती फट रही है," भालू ने दोहराया, वह घबरा गया. "धरती फट रही है? फिर मैं क्या कर रहा हूँ, मुझे झटपट चल देना चाहिए." और भालू भी भागने लगा. शीघ्र ही वह सब दूसरे भालू के पास पहुँच गए. दूसरा भालू एक शहद के छत्ते को चबा कर शहद खा रहा था और आसपास उड़ती हुई मधुमक्खियों को तमाचे भी मार रहा था. "अरे, क्या हो रहा है? तुम सब क्यों भाग रहे हो?" उसने पूछा.

"धरती फट रही है! इसलिए हम सब भाग रहे हैं!" उन्होंने भागते-भागते ही चिल्ला कर कहा. "भागो, भागो."

भालू झटपट खड़ा हो गया. "धरती फट रही है?" उसने अपने आप से कहा. "हे भगवान! मैं समय नहीं गंवा सकता." शहद के छत्ते का अंतिम टुकड़ा मुँह में ठूँस कर वह भी दौड़ पड़ा.



आगे जंगल में, एक पेड़ की छाया में खड़ा, एक हाथी अपनी आँखें आधी बंद किये आराम कर रहा था. उसके विशाल कान धीरे-धीरे आगे-पीछे लहराते हुए हवा कर रहे थे और इधर-उधर फटकती पूँछ मक्खियों को उड़ा रही थी. सहसा उसके कान आगे की ओर घूमे और वहीं रुक गए. उसकी आँखें पूरी की पूरी खुल गईं. तीन भयभीत खरगोश और दो घबराये हुए भालू झाड़ियों के अंदर से अचानक प्रकट हो गए. “क्या हुआ?” वह आश्चर्य से बोला. “तुम सब क्यों भाग रहे हो?”

लेकिन उन डरे हुए जानवरों ने चिल्लाकर इतना ही कहा, “धरती फट रही है. अपनी जान बचाने के लिए भागो!” और वह सब भागते रहे.

“धरती फट रही है,” गड़गड़ाती आवाज़ में हाथी ने कहा. “अरे, अगर धरती फट रही है तो समय मूर्खता होगी. मैं भी तुम्हारे साथ आ रहा हूँ.” और ज़ोर से चिंघाड़ते हुए वह भागने लगा, उसकी पूँछ सीधी पीछे की ओर थी.



सब जानवर एक रास्ते पर भागते गए. उनके धम-धम दौड़ने से एक साँप, जो दुपहर की गर्म धूप में एक चट्टान पर लेटा सो रहा था, घबरा गया. उसने अपनी एक आँख खोली. उसने अपनी दूसरी आँख खोली. अपनी गुलाबी, नुकीली जीभ को बाहर निकाल कर हवा में झटका दिया और अपने सिर को ऊपर उठाया. अचानक तीन चीखते हुए खरगोश, दो रोते हुए भालू और एक चिंघाड़ता हुआ हाथी अंधाधुंध भागते हुए उसके सामने से निकले.

“क्या हो रहा है?” साँप ने व्याकुलता से पूछा. “तुम सब क्यों भाग रहे हो?”

“धरती फट रही है,” सब जानवर चिल्लाये. “यह अंत है. अपनी जान बचाने के लिए भागो!” और वह सब भागते रहे.

“क्या कहा उन्होंने?” साँप बोला. “धरती फट रही है? यहाँ से भाग जाने में ही भलाई है.” अपनी कुंडली खोल कर वह सीधा हो गया और गर्म चट्टान से नीचे उतर आया और दूसरों के पीछे तेज़-तेज़ रेंगने लगा.

वह एक साँप के पास से गुज़रा, फिर दूसरे साँप के पास से, फिर तीसरे साँप के पास से. जब उन्हें पता चला कि क्या हो रहा था तो वह भी पेड़ों और चट्टानों से उतर कर, झाड़ियों से बाहर निकल कर भयभीत जानवरों के पीछे-पीछे आने लगे. शीघ्र ही सारे जंगल में चिंघाड़ने, रोने, चीखने, चिल्लाने की आवाज़े सुनाई देने लगीं.



अब उसी समय पहाड़ की चोटी पर, जहाँ से सारा जंगल दिखाई देता था, एक बहादुर शेर सो रहा था. उसे जंगल में शोर सुनाई दिया. उसने अपनी आँखें खोलीं. उसने जंगल की ओर देखा. उसने भागते हुए जानवरों को देखा. उसे पता न चला कि वह क्यों भाग रहे थे. लेकिन उसने समझ लिया कि अगर किसी ने उन्हें रोका नहीं तो वह सब टीले के किनारे से नीचे गिर कर मर जायेंगे. “किसी को उनकी सहायता करनी चाहिए.” शेर ने अपने आप से कहा. “क्यों न मैं ही उनकी सहायता करूँ.”

वह खड़ा हुआ और अपने शरीर का झटका दिया. अपनी सारी ताकत लगा कर उसने एक बड़ी लंबी छलांग लगाई और भयभीत जानवरों के सामने आ पहुँचा. हाँफते, चीखते हुए वह सब अचानक रुक गए.

“रअअअअअरआआआआ!” शेर दहाड़ा. “क्या हुआ है? तुम सब क्यों भाग रहे हो?”

“धरती फट रही है! धरती फट रही है! इसलिए हम भाग रहे हैं.” सब जानवर चिल्लाये. “ओह, शक्तिमान शेर, इसके पहले कि हम मारे जायें, चलो यहाँ से भाग चलें.”

“धरती नहीं फट रही, मूर्खो,” शेर ने कहा. “देखो इस धरती को. यह सदा की तरह ठोस और मज़बूत है.” और अपनी बात प्रमाणित करने के लिए उसने धरती पर अपने पंजे से ज़ोर से प्रहार किया. “तुम से किसने कहा कि धरती फट रही है?”



“हाथी ने कहा था,” साँप ने बताया.

“भालूओं ने कहा था,” हाथी चिंघाड़े.

“खरगोशों ने कहा था,” भालू रोते हुए बोले.

“उसने कहा था,” छोटे मूर्ख खरगोश की ओर संकेत करते हुए अन्य खरगोशों ने कहा.

“तो, छोटे खरगोश तुम ने धरती को फटते कहाँ देखा था?” शेर ने बड़ी नम्रता से पूछा.

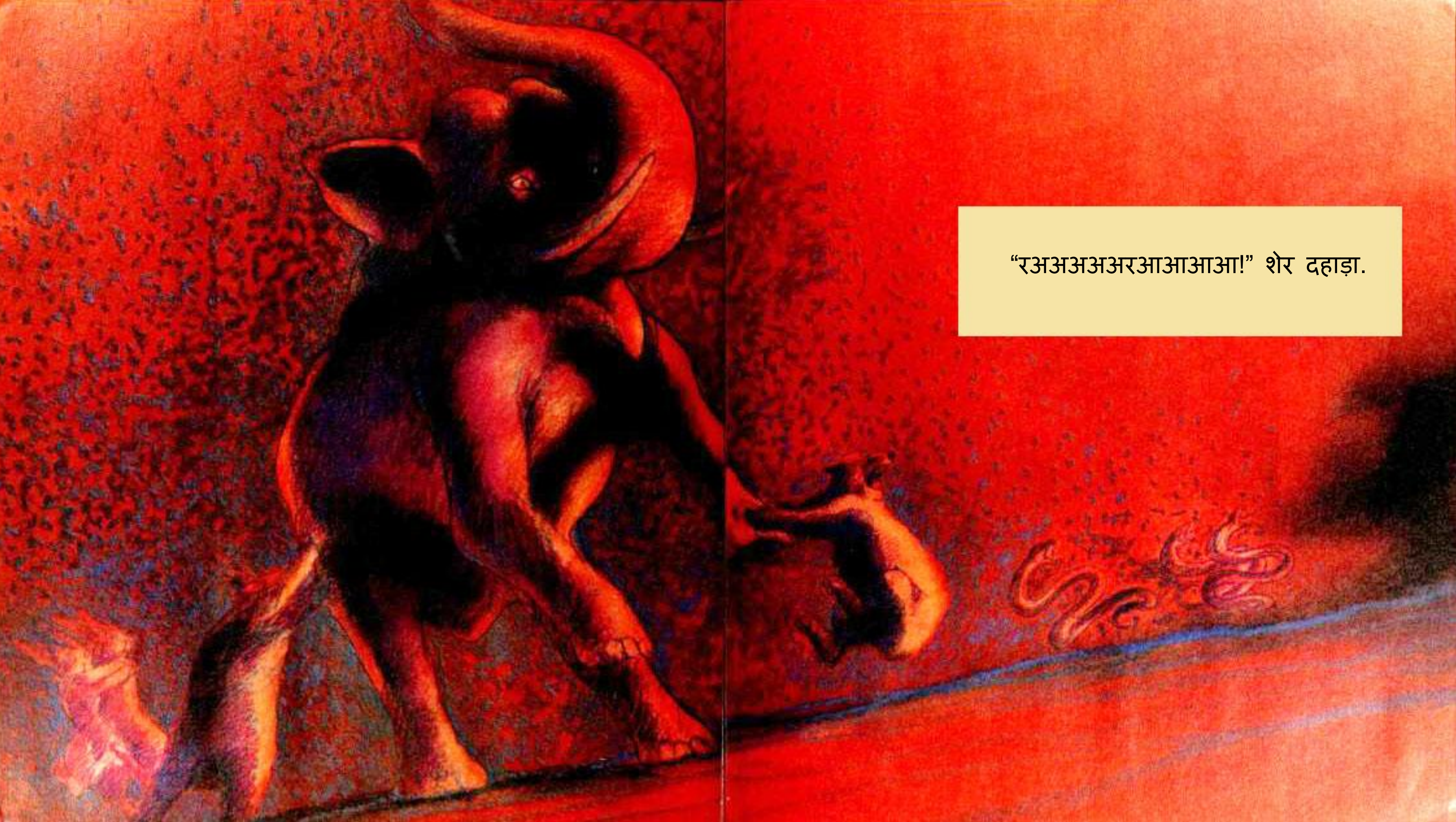
“वहाँ उधर सेब के पेड़ के पास. मुझे सुनाई दिया था,” छोटे मूर्ख खरगोश ने धीमी आवाज़ में डरते-डरते कहा.

“हम्म्म,” शेर ने अपने आप से कहा. “उसने सुना था? सेब के पेड़ के नीचे?” फिर एक बात उसके मन में आई.

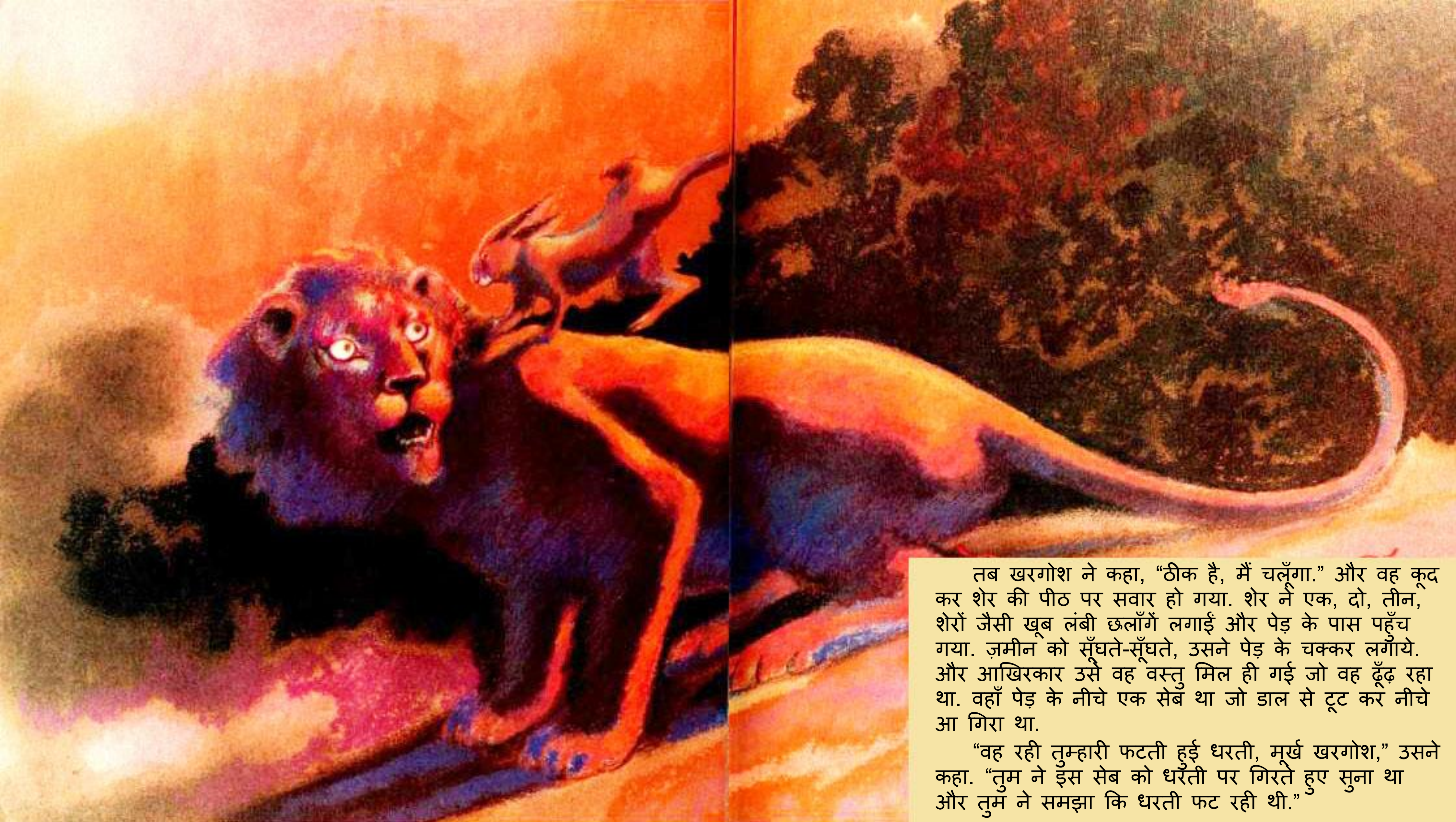
“चलो,” उसने कहा. “मेरी पीठ पर सवार हो जाओ. हम सब एक साथ वहाँ जायेंगे और पता लगायेंगे कि वह क्या था जिस ने तुम्हें डरा दिया था.”

“ओह, नहीं,” मूर्ख खरगोश ने विरोध किया. “वहाँ बहुत खतरा है. मैं वहाँ नहीं जो सकता.” और वह जाने को तैयार न था.





“रअअअअअरआआआआ!” शेर दहाड़ा.



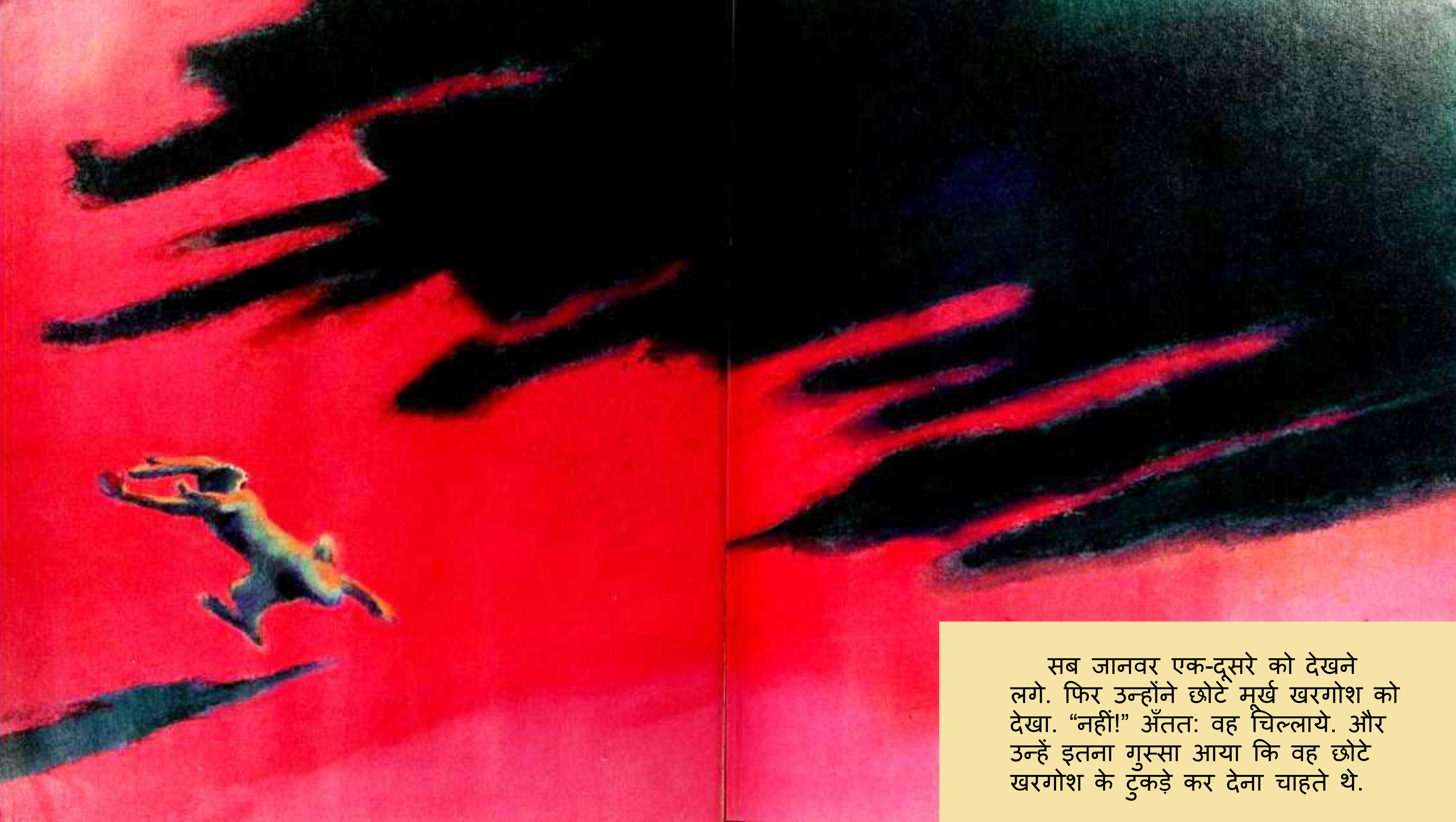
तब खरगोश ने कहा, "ठीक है, मैं चलूँगा." और वह कूद कर शेर की पीठ पर सवार हो गया. शेर ने एक, दो, तीन, शेरों जैसी खूब लंबी छलाँगें लगाईं और पेड़ के पास पहुँच गया. ज़मीन को सूँघते-सूँघते, उसने पेड़ के चक्कर लगाये. और आखिरकार उसे वह वस्तु मिल ही गई जो वह ढूँढ़ रहा था. वहाँ पेड़ के नीचे एक सेब था जो डाल से टूट कर नीचे आ गिरा था.

"वह रही तुम्हारी फटती हुई धरती, मूर्ख खरगोश," उसने कहा. "तुम ने इस सेब को धरती पर गिरते हुए सुना था और तुम ने समझा कि धरती फट रही थी."



“हे भगवान,” खरगोश ने कहा. “कैसी भूल हो गई. क्या बात का बतंगड़ बन गया.”

“ठीक है,” शेर ने कहा, “अब हमें लौट कर सब को बताना चाहिए.” शेर ने फिर एक, दो, तीन खूब लंबी छलाँगें लगाईं. जब वह अन्य जानवरों के सामने खड़े थे तो खरगोश ने समझाने का प्रयास किया, “ऐसा लगता है कि मुझ से बड़ी, अह, भूल हो गई. तुम यह सेब देख रहे हो? जब यह सेब धरती पर गिरा तो इसके गिरने की आवाज़ सुन कर मैंने समझा कि, अम्म, वह धरती फटने की आवाज़ थी. आप मेरी बात समझ रहे हो न, ओह, नहीं समझ रहे क्या?”



सब जानवर एक-दूसरे को देखने लगे. फिर उन्होंने छोटे मूर्ख खरगोश को देखा. “नहीं!” अँतत: वह चिल्लाये. और उन्हें इतना गुस्सा आया कि वह छोटे खरगोश के टुकड़े कर देना चाहते थे.

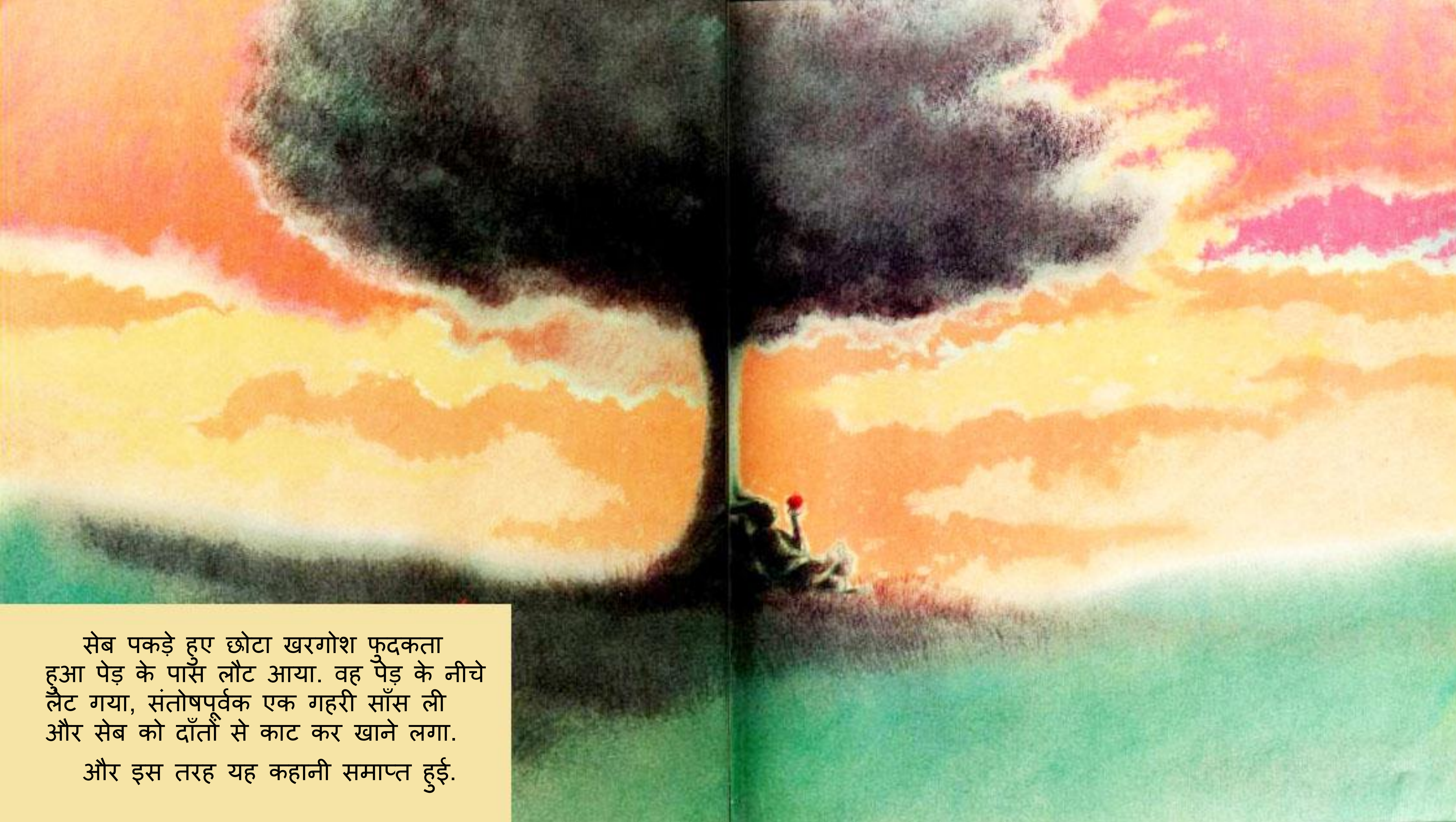
“रअअअअअरआआआआ!” शेर दहाड़ा. “रुको. यह जाने बिना कि तुम्हें क्या डरा रहा था, तुम भागने लगे. अगली बार जब तुम्हें किसी बात से डर लगे तो इस घटना को याद करना. अगर तुम रुक कर जाँच करोगे तो तुम पाओगे कि भयभीत होने का सच में कोई कारण नहीं था.”

“आप सही कह रहे हैं,” सब जानवर एक साथ बोले. “अगली बार हम ऐसा ही करेंगे.”

“मैं भी,” छोटे खरगोश ने कहा.

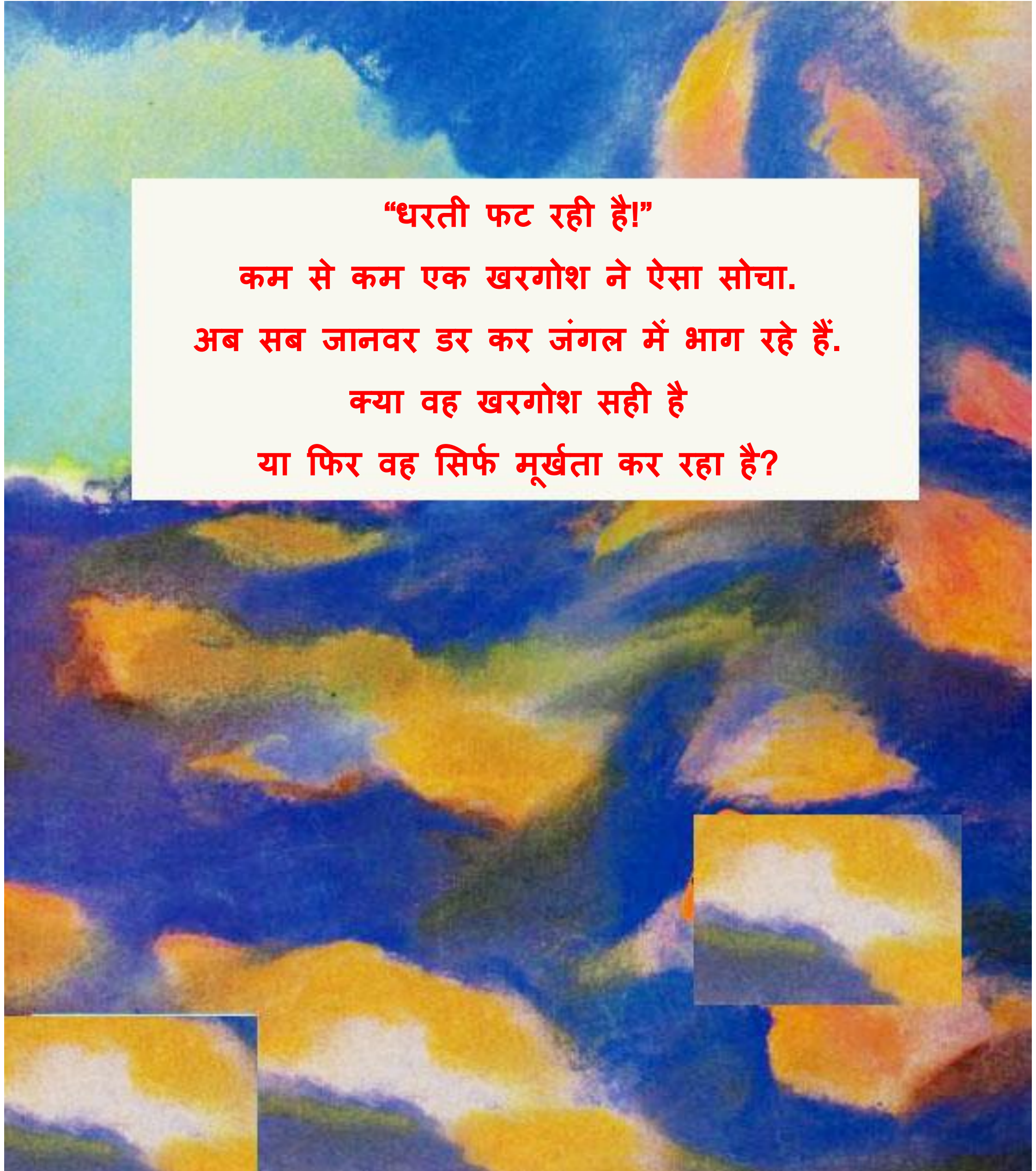
फिर शेर ने एक बड़ी छलांग लगाई और पहाड़ की चोटी पर चढ़ गया. वह लेट गया और शांत भाव से नीचे शांतिपूर्ण जंगल को देखने लगा, उसने एक अँगड़ाई ली और फिर से सो गया.





सेब पकड़े हुए छोटा खरगोश फुदकता हुआ पेड़ के पास लौट आया. वह पेड़ के नीचे लेट गया, संतोषपूर्वक एक गहरी साँस ली और सेब को दाँतों से काट कर खाने लगा.

और इस तरह यह कहानी समाप्त हुई.



"धरती फट रही है!"

कम से कम एक खरगोश ने ऐसा सोचा.

अब सब जानवर डर कर जंगल में भाग रहे हैं.

क्या वह खरगोश सही है

या फिर वह सिर्फ मूर्खता कर रहा है?